



# THE ChangeMakers



July to September 2024 Issue 21

Transforming Rural Bihar



सामाजिक  
परिवर्तन  
विशेषांक



सामुदायिक सहभागिता से  
सामाजिक परिवर्तन की पहल

Page 01



Building Futures: Education &  
Skill Development for Empowerment

Page 05



मतदाता जागरुकता एवं नागरिक  
सहभागिता: जीविका का प्रयास

Page 03



बड़की दीदी

Page 21

## From the editor's desk

Dear Readers,

Welcome to our next edition of the Change Makers, where we focus on social development. In the heart of Bihar's rural landscape, JEEVIKA has emerged as a beacon of hope, driving transformative social and financial changes. Through its community-led interventions and capacity-building initiatives, JEEVIKA is reshaping the economic and social fabric of villages, empowering women, and strengthening the last among the citizens.

In the era where development is measured on economic terms, JEEVIKA reminds us that true progress begins with women with their dignity, their rights, and their collective strength. At the heart of this transformation are the Self-Help Groups (SHGs), where women come together not just to save and earn, but to learn, lead, and uplift one another. These SHGs have become spaces of dialogue, support, and action. Through capacity-building, access to financial tools, and a strong sense of community, JEEVIKA is enabling rural women to take charge of their lives and community at large. Whether it is fighting for women rights and violence against women, participating and representation at local governance, or becoming entrepreneur, these women are now agents of social change.

This issue is not just a reflection of achievements it's a celebration of the unseen social revolution being led by women with determination.

Thank you for joining us on this journey.

Regards  
**Mahua Roy Choudhury**  
pc.gkm@brlps.in

### EDITORIAL TEAM

• **Mrs. Mahua Roy Chaudhury**  
Program Coordinator (G&KM)

• **Mr. Pawan Kr. Priyadarshi**  
Project Manager (Communication)

• **Mr. Rahul Kumar**  
Project Manager (DER)

• **Mr. Biplab Sarkar**  
Manager - Communication

## संदेश



**श्रीमती अभिलाषा कुमारी शर्मा (भा.प्र.से.)**  
अपर मुख्य कार्यपालक पदाधिकारी, जीविका (BRLPS)

बिहार के ग्रामीण इलाकों में जीविका ने न केवल आर्थिक सशक्तिकरण बल्कि गहरे सामाजिक बदलाव की नींव रखी है। यह बदलाव, जो महिलाओं की आत्मनिर्भरता, सामाजिक सम्मान, और सामुदायिक सहभागिता के रूप में उभर रहा है, हमारी निरंतर कोशिशों का परिणाम है। जीविका के माध्यम से दीदियों को स्वावलंबन के मार्ग पर लाने का उद्देश्य न केवल उनकी आय बढ़ाना है, बल्कि उन्हें समाज में एक सशक्त पहचान और नेतृत्व का अवसर प्रदान करना है।

हमारी दीदियों ने पशुपालन, कृषि, उद्यमिता जैसे आयामों में कदम रखते हुए अपने परिवारों को आर्थिक स्थिरता दी है। इससे भी अधिक, उन्होंने अपने समुदायों में बदलाव की चिंगारी को सुलगाया है। आज वे अपने बच्चों की शिक्षा, परिवार के स्वास्थ्य और समाज के कल्याण में महत्वपूर्ण योगदान दे रही हैं। यह जीविका के प्रयासों का ही परिणाम है कि महिलाएं अब निर्णय प्रक्रिया में आत्मविश्वास के साथ हिस्सा ले रही हैं और अपने आसपास एक सकारात्मक माहौल का निर्माण कर रही हैं।

इस विशेष अंक में हम उन बदलावों की कहानियाँ प्रस्तुत कर रहे हैं, जिन्होंने न केवल दीदियों के जीवन को बदला है, बल्कि उनके माध्यम से पूरे समुदाय में जागरूकता और प्रेरणा का संचार किया है। आशा है कि हमारे पाठक इन कहानियों के माध्यम से सामाजिक बदलाव के इस सफर का हिस्सा बनेंगे और इसे और अधिक सशक्त बनाने में हमारा साथ देंगे।

## CONTENTS

सामुदायिक सहभागिता से सामाजिक परिवर्तन की पहल.....	01
Transforming Lives : The Power of Livelihood Programs.....	03
Health and Wellness: Enhancing through Nutrition and Care.....	06
Building Futures: Education & Skill Development for Empowerment.....	09
महिलाओं की शिक्षा और आर्थिक स्वतंत्रता: समाज में आया सकारात्मक बदलाव.....	12
मतदाता जागरूकता एवं नागरिक सहभागिता: जीविका का प्रयास.....	14
सतत् जीविकोपार्जन योजना सामाजिक परिवर्तन की बयार.....	16



श्री हिमांशु शर्मा (भा.प्र.से.)

मुख्य कार्यपालक पदाधिकारी, जीविका (BRLPS)

राज्य मिशन निदेशक, लोहिया स्वच्छ बिहार अभियान

बिहार के ग्रामीण क्षेत्रों में महिलाओं को सशक्त बनाने की दिशा में जीविका का कार्य एक सामाजिक क्रांति की मिसाल है। हमारे सभी प्रयास इस बात पर केंद्रित हैं कि हर महिला अपने परिवार, समाज और समुदाय के लिए आत्मनिर्भर बन सके और उन्हें आर्थिक व सामाजिक सशक्तिकरण की दिशा में आगे बढ़ने के अवसर मिलें। सामाजिक बदलाव की इस यात्रा में महिलाओं के सशक्तिकरण से जुड़ी हर गतिविधि एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है।

जीविका के माध्यम से हमारी दीदियों ने आजीविका के विभिन्न साधनों को अपनाया है, जैसे कि पशुपालन, कृषि, उद्यमिता, और कुटीर उद्योग, जिससे उनके परिवारों को आर्थिक स्थिरता मिल रही है। लेकिन यह बदलाव केवल आर्थिक ही नहीं, बल्कि सामाजिक है। दीदियों ने आत्मनिर्भरता का मार्ग अपनाते हुए अपने समुदायों में अपनी एक नई पहचान बनाई है और निर्णय लेने की प्रक्रिया में सक्रिय भूमिका निभाने लगी हैं।

हमने देखा है कि जब महिलाएं आत्मनिर्भर बनती हैं, तो वे अपने बच्चों की शिक्षा, परिवार के स्वास्थ्य और सामुदायिक कल्याण के प्रति अधिक जागरूक होती हैं। इसके अतिरिक्त, उन्होंने सामूहिक जिम्मेदारी के सिद्धांत को अपनाकर समाज में सकारात्मक बदलाव की शुरुआत की है। जीविका के प्रशिक्षण और सामूहिक सहयोग के मॉडल ने उन्हें एकजुट किया है, जिससे वे आपसी सहयोग और सामूहिक विकास की दिशा में आगे बढ़ रही हैं।

इस विशेष संस्करण में आप जीविका की उन कहानियों से रूबरू होंगे, जो सामाजिक बदलाव की दिशा में प्रेरणास्रोत हैं। हमें उम्मीद है कि इन कहानियों से समाज में सकारात्मक बदलाव की भावना को बल मिलेगा और हमारा यह प्रयास बिहार के हर कोने में एक नई सोच और दिशा का प्रसार करेगा।

# CONTENTS

Addressing Gender Challenges: Programs and Impact .....	18
Empowerment through Knowledge: JEEVIKA's Publications.....	21
दीदी की कहानी : दीदी की जुबानी.....	23
बड़की दीदी .....	26
मन की कलम से .....	28
Events .....	29



01 सामुदायिक सहभागिता से सामाजिक परिवर्तन की पहल



06 Health and Wellness



07 Addressing Gender Challenges



11 JEEVIKA's Publications



# सामुदायिक सहभागिता से सामाजिक परिवर्तन की पहल

‘एक अकेला चना भाँड़ नहीं फोड़ सकता।’ यह कहावत तो हर किसी की जुबान पर होता है। मगर इसके निहितार्थ को बहुत कम लोग समझते हैं। दरअसल संगठन में शक्ति निहित होती है और एकता में बल होता है। एक अकेला व्यक्ति सामाजिक परिवर्तन लाने में नाकाम होता है। वहीं सामूहिक शक्ति एवं संगठित प्रयास से सामाजिक परिवर्तन लाना संभव है। जीविका ने इस अवधारणा को सही मायने में फलीभूत किया है। पहले विभिन्न रूढ़ीवादी परम्पराओं, मान्यताओं और सामाजिक बेड़ियों में जकड़ी महिलाओं ने अब जीविका सामुदायिक संगठन के माध्यम से अपने सामूहिक प्रयास, परस्पर भागीदारी, जागरूकता और सक्रियता से न केवल अपने जीवन में परिवर्तन लाया है बल्कि समाज को भी एक नई दिशा दी है। कभी गरीबी, अशिक्षा और अभावों के दुश्चक्र में फंसी ग्रामीण क्षेत्र की ये महिलाएँ अब सामाजिक परिवर्तन की ध्वजवाहिका बन गई हैं।

बहरहाल वर्ष 2007 में शुरू की गई जीविका परियोजना ने पिछले करीब डेढ़ दशक के अपने सफर में बिहार के ग्रामीण क्षेत्र की महिलाओं के सामाजिक एवं आर्थिक सशक्तिकरण हेतु अनेकों कार्य किये हैं। परिणामस्वरूप बिहार की महिलाएँ अब प्रगति के पथ पर अग्रसर हो रही हैं। इससे न केवल महिलाओं में स्वावलंबन आया है बल्कि सामाजिक फिजा भी बदल रही है। जीविका स्वयं सहायता समूह की वजह से ग्रामीण स्तर पर गरीब परिवारों की महिलाओं में आई आत्मनिर्भरता जागरूकता, सांगठनिक एकता एवं सामूहिकता की वजह से व्यापक सामाजिक परिवर्तन भी हुआ है।

बिहार में जीविका द्वारा गठित 10 लाख से अधिक स्वयं सहायता समूहों से करीब सवा करोड़ महिलाएँ जुड़ी हैं। इससे महिलाओं में काफी सकारात्मक बदलाव आया है और उन्होंने विकास के पथ पर मजबूती के साथ अपने कदम बढ़ा दिए हैं। सामाजिक और आर्थिक गतिविधियों में महिलाओं की बढ़ती भागीदारी से समाज में भी बदलाव दिखने लगा है। पहले अपने खिलाफ होने वाले हर प्रकार के शोषण को भी वे चुपचाप सहन कर लेती थीं, लेकिन जीविका सामुदायिक संगठनों की बदौलत आज वे अपने अधिकारों के प्रति सजग हुई हैं और विभिन्न



प्रकार की सामाजिक बुराइयों को दूर करने के लिए मुखर हो रही हैं। दहेज प्रथा, बाल विवाह और शराब जैसी कुश्रितियों को दूर भगाने के लिए वे अभियान चलाकर समाज सुधार का संदेश दे रही हैं। लिंग आधारित किसी भी प्रकार के भेद भाव को खत्म करने के लिए वे संगठित होकर आवाज उठा रही हैं।

जीविका सामुदायिक संगठनों द्वारा सरकार की योजनाओं को सीधे लाभार्थियों तक पहुंचाने हेतु विशेष पहल की जाती है। इससे महिलाओं के लिए सरकार की विभिन्न कल्याणकारी योजनाओं का लाभ पाना आसान हुआ है। जीविका द्वारा दीदी अधिकार केंद्र जैसे अभिनव प्रयोग से दीदियों को न केवल सरकार की योजनाओं के बारे में जानकारी उपलब्ध कराई जा रही है बल्कि उन्हें योजनाओं का लाभ पाने में भी मदद की जा रही है।

बहरहाल जीविका समूह से जुड़कर महिलाएँ काफी सशक्त हुई हैं। पहले घर की चाहदीवारी तक सीमित रहने वाली ये महिलाएँ अब घर की चौखट लाँघकर हरेक क्षेत्र में अपना कदम बढ़ा रही हैं। तमाम बंधनों को तोड़कर वे जीविका समूह की साप्ताहिक बैठक में नियमित रूप से हिस्सा लेती हैं और समाज के हित में विचार-विमर्श करती हैं। समाज की भलाई हेतु उचित एवं सामूहिक निर्णय लेती हैं। आवश्यकता पड़ने पर वे एक-दूसरे की मदद भी करती हैं। सामाजिक भेद-भाव को खत्म करते हुए विभिन्न जाति एवं धर्म की महिलाएँ अब जीविका के सामुदायिक संगठनों की

बैठकों में एक-साथ बैठती हैं। इससे समाज में आपसी विश्वास और प्रेम का वातावरण बना है।

समूह से जुड़ी निरक्षर महिलाओं को हस्ताक्षर करना सिखाया गया है। ये महिलाएँ पहले किसी की पत्नी-माँ- बहु या मायके के नाम से जानी-पहचानी जाती थीं, लेकिन जीविका समूह में जुड़ने के बाद उन्हें अपने नाम से पहचान मिली है। अब वे खुद के नाम से पुकारी जाती हैं। इससे उनमें आत्मसम्मान का भाव आया है। साथ ही साथ ग्रामीण समाज में सदियों से चली आ रही रूढ़ीवादी परंपरा भी टूटी है। जीविका समूह से जुड़ी महिलाओं को सामूहिक रूप से 'जीविका दीदी' के नाम से पूरी दुनियाँ में एक पहचान मिली है।

जीविका समूह से जुड़े तमाम क्रियाकलापों में अब वे आत्मविश्वास के साथ हिस्सा लेती हैं। जीविका दीदियाँ समूह के काम से बैंक एवं अन्य सरकारी कार्यालय पहुंच रही हैं। वे वहाँ अधिकारियों के साथ संवाद करती हैं और अपने कामों का सुगमतापूर्वक निष्पादन कराती हैं। इससे उनके मनोबल में बढ़ोतरी हुई है। समूह के माध्यम से दीदियों ने बचत के महत्व को समझा एवं समूह से सस्ते ब्याज दर पर ऋण लेकर साहुकारों से मुक्ति पाई है। साथ ही समूह की सहायता से उन्हें विभिन्न विषयों पर जानकारी मिली है, जिससे जीविकोपार्जन की राह आसान हुई है। यही कारण है कि जीविकोपार्जन के तमाम क्षेत्रों में इन्होंने अपना कदम बढ़ाया है और इनमें अभूतपूर्व सफलता हासिल कर कामयाबी की नई कहानी लिखी है। समाज में महिलाओं के प्रति बनी गलत धारना को जीविका दीदियों ने अब तोड़ दिया है।

बिहार सरकार द्वारा संचालित सतत् जीविकोपार्जन योजना के क्रियान्वयन में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। इस योजना के तहत अत्यंत गरीब परिवारों का चयन से लेकर उनके रोजगार की शुरुआत एवं संचालन में जीविका दीदियाँ महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही हैं।

लिहाजा महिलाओं में आए इस परिवर्तन से समाज में भी बदलाव दिखने लगा है। महिलाओं को आगे बढ़ता देखकर समाज के लोग भी प्रेरणा ले रहे हैं। आर्थिक गतिविधियों को अपनाकर महिलाओं ने अपने परिवार को भी आर्थिक रूप से सबल बनाया है। इससे उनका अपने परिवार एवं समाज में मान सम्मान बढ़ा है। सामुदायिक संगठन के माध्यम से महिलाओं को अब बड़े मंच पर पहुंचने का अवसर मिला। इससे इन्होंने अपनी उपलब्धियों से सभी का ध्यान आकर्षित किया है। इस प्रकार जीविका सामुदायिक संगठनों की सक्रियता एवं निर्णायक भागीदारी से समाज में व्यापक परिवर्तन



# Transforming Lives : The Power of Livelihood Programs.

Lao Tzu's ancient proverb, "Give a man a fish, feed him for a day. Teach a man to fish, feed him for a lifetime," remains profoundly relevant today. Despite having the highest poverty rate in India at 26.59%, Bihar has made significant move, lifting 7% of its population out of multidimensional poverty in just two years— from 33.76% in 2019-21 to 26.59% in 2022-23, according to a NITI Aayog report released on January 15, 2024.

The Bihar government's efforts to reduce poverty are yielding positive results, particularly through livelihood program named JEEVIKA. This flagship initiative, the Bihar Rural Livelihoods Promotion Society (JEEVIKA), has successfully organized 1.31 crore households into 10.3 lakh Self-Help Groups (SHGs). These SHGs now have access to credit, support, and guidance, empowering them to create sustainable livelihoods and contributing significantly to poverty reduction in the state.

- The program addresses three key social dimensions of sustainable development: poverty reduction, social investment, and the creation of safe, caring communities. The development initiatives to target women specifically, empowering them as active participants who make major decisions. Many women have become entrepreneurs, community leaders, and elected representatives in local bodies.
- The livelihoods approach places "Didis" at the center of development. Programs based on this approach enable Didis and their families to build assets and develop skills, opening up new opportunities for income generation and employment. Special support packages are provided to landless families, single women-headed households, and toddy tappers through the SJY scheme, enhancing participation in development.

- Rural livelihoods programs have facilitated the formation of self-help groups, their federations, and producer groups/companies, significantly enhancing access to fair credit leverage and improving market linkages for value-added products.

### **Empowering Rural Households through Diversified Livelihood Strategies**

JEEVIKA is committed to building resilient livelihoods, recognizing the need to not only create opportunities but also ensure they are sustainable and resilient to shocks and stresses. The initiative empowers Didis to make informed decisions, considering both their traditional livelihoods in agriculture & allied sectors and customary profession, as well as their entrepreneurial aspirations. Many Didis have successfully established small businesses that support their families, the extensive training in financial management, agricultural practices, and non-farm activities provided by JEEVIKA to community at large and its community professionals. These training sessions equip them with the skills necessary to manage their businesses effectively and ensure the long-term sustainability of their livelihoods.

BRLPS programs focus on rural households, adopting both cluster-based and universal approaches to income-generating activities in agriculture, livestock, and non-farm sectors. While agriculture and natural resource harvesting are primary sources of livelihood for many of the poorest, opportunities exist for the rural poor to build assets and improve sustainable income. Our programs enable the poor to seize these opportunities by supporting community-based organizations like SHGs, VOs, and CLFs, developing essential skills, and facilitating access to resources, technical advice, and markets. By diversifying livelihoods, we help communities mitigate risks and increase incomes, exploring opportunities both within and beyond agriculture to provide a range of options tailored to their needs and capacities.

### **Micro-Enterprise and Entrepreneurship development**

Beyond promoting sustainable agriculture, JEEVIKA actively supports the development of micro-enterprises and value chains. By linking rural producers to larger markets, the program enables them to secure better prices for their products, enhancing income and

ensuring financial stability. This market linkage approach has been particularly effective in empowering small farmers and artisans, who often struggle to access markets and compete with larger producers. Successful interventions like Didi ki Rasoi, Didi ki Nursery, Aajeevika Grameen Express Yojana, Startup Village Entrepreneurship Program, One Stop Facility Centre, Bag Manufacturing Cluster, Mukhyamantri Udyami Yojana, Micro Enterprise Program (MED), and sanitary napkin production units etc. have all proven to be successful models in this endeavor.

### **Jobs and Skills Development: Empowering Rural Youth through Training & Employment**

JEEVIKA, in collaboration with various partners, is actively promoting job creation and vocational training programs. In Bihar, over 3.9 lakh rural youths have received training under DDUGKY and RSETI initiatives. As a result of these skill development efforts and job fairs, more than 1 lakh youths have secured employment both nationally and internationally, while approximately 2.2 lakh have successfully established livelihoods opportunity or self-employment through RSETI.

### **Enhancing Development through Convergence**

The convergence of government schemes and programs such as PMFME, SVEEP, Mukhyamantri Udhaymi Yojna, Integrated Goat and Sheep Development Scheme, Integrated Poultry Development Scheme, and Agriculture Department's Customer Hiring Centers has emerged as a successful model for improving development effectiveness. By integrating these initiatives, a comprehensive and sustainable framework has been created that strengthens rural livelihoods. This approach not only optimizes resource allocation but also fosters collaboration across diverse sectors, maximizing impact and ensuring the long-term sustainability of rural development efforts

### **Strengthening CBOs and Promoting Self-Governance: Foundations for Sustainable Livelihoods**

Strengthening Community-Based Organizations (CBOs) and fostering self-governance are key to sustainable livelihoods programs. Effective management of resources, whether financial or natural, depends on robust institutions and active community engagement.

Communities undertake participatory needs assessments, conduct household wealth rankings, and create community action or micro plans. Funds are managed at the CBO level, positioning these organizations as central to rural development efforts. Emphasis is placed on capacity building in financial management, organizational development, village planning, and social audits to ensure transparency and inclusivity in program implementation.

### **Social Protection and Health-Nutrition-Sanitation (HNS) Interventions: Enhancing Beneficiary Support and Well-Being**

JEEVIKA plays a crucial role in facilitating access to various government schemes and programs aimed at enhancing social protection and health. The initiative supports beneficiaries in obtaining essential services such as Ayushman Bharat health cards, PMJJBY (Pradhan Mantri Jeevan Jyoti Bima Yojana), PMSBY (Pradhan Mantri Suraksha Bima Yojana), and pension scheme.

In addition to these supports, JEEVIKA emphasizes Behavior Change Communication (BCC) to promote positive changes in health and nutrition practices among beneficiaries. BCC strategies focus on improving food diet diversity, hygiene, and overall well-being, ensuring that beneficiaries not only access but also effectively utilize these social protection schemes. Through these comprehensive interventions, JEEVIKA aims to enhance the overall quality of life for rural populations, contributing to their long-term health and financial stability.

JEEVIKA's multifaceted approach to rural development has demonstrated significant success in addressing the complex challenges faced by Bihar's rural population. By integrating various government schemes and programs, JEEVIKA has not only advanced poverty reduction but also empowered women, supported micro-enterprises, and enhanced community-based resource management. Its commitment to building resilient livelihoods, promoting entrepreneurial activities, and facilitating skills development has transformed the economic landscape for millions. Through strategic convergence, capacity building, and robust support systems, JEEVIKA has established a sustainable framework that fosters long-term development and well-being. The emphasis on social protection, health, and nutrition further ensures that beneficiaries are equipped with the tools and knowledge needed for a better quality of life. As JEEVIKA continues to innovate and expand its efforts, it stands as a model for effective rural development, proving that comprehensive and inclusive strategies can lead to lasting, positive change.





# Health and Wellness: Enhancing through Nutrition and Care

JEEVIKA's Health, Nutrition, and Sanitation (HNS) program is a pivotal component of Bihar's strategy to enhance rural health and wellness. Through a combination of targeted interventions and sustainable practices, JEEVIKA addresses health concerns, particularly focusing on maternal and child nutrition, adult health, and sanitation. This document provides an in-depth look at how JEEVIKA's programs and practices contribute to improved health outcomes and long-term community benefits.

**Behaviour Change Communication (BCC):** JEEVIKA's Social and Behaviour Change Communication (SBCC) initiative is a well-structured program aimed at creating sustainable behaviour changes within Self-Help Groups (SHGs). The program is executed by Community Mobilizers (CMs), who are responsible for delivering specially designed training modules to SHG members. Each month, a key module is introduced during the first weekly SHG meeting, focusing on important topics like dietary diversity for pregnant women, lactating mothers, and young children, as well as menstrual hygiene and the use of sanitary facilities.

The approach doesn't stop at just one session. The key messages from these modules are reinforced in subsequent weekly meetings throughout the month, ensuring that the information is retained and applied by the participants. Additionally, CMs identify households

that may need extra support and provide further assistance as needed. This layered approach, which uses various medium and regular follow-up, have proven to be highly effective in promoting sustainable behavioral changes at the community level, ensuring that the knowledge gained translates into long-term, positive health practices.

## 1. Enhancing Maternal and Child Nutrition:

JEEVIKA's approach to maternal and child nutrition is multifaceted, integrating food security, health education, and direct support programs.

### Maternal and Child Nutrition Programs:

**Family Dietary Diversity Campaign (FDDC):** The Family Dietary Diversity Campaign (FDDC) under JEEVIKA is a structured initiative aimed at enhancing maternal and child nutrition. This campaign focuses on promoting dietary diversity among pregnant women, lactating mothers, and children aged 6-23 months in rural communities.

**Objective:** The primary objective of the FDDC is to improve dietary practices within SHG households by educating beneficiaries on key health topics such as Antenatal Care, the importance of nutrition, protein intake, and promoting institutional deliveries. The

campaign also aims to increase awareness and practice of exclusive breastfeeding and complementary feeding, alongside broader nutritional education.

- To assess dietary diversity among 6-23 months old children, lactating women and pregnant women.
- To understand the reach and retention of the messages disseminated through the Family Dietary Diversity Campaign (FDDC).
- To understand impact of dietary diversity campaigns on dietary practices of young children (6-23 months), lactating mothers of 6-23 months children and pregnant women, particularly among women associated with SHGs and SHG household members.

**Program Structure:** After rolling out BCC modules at the SHG level, Community Mobilizers (CMs) prepare a line list of targeted households. Community Nutrition Resource Persons (CNRPs) then visit these households to provide direct education and counselling. These visits focus on Antenatal Care (ANC), promoting institutional delivery, and emphasizing the importance of exclusive breastfeeding within the first hour after birth. CNRPs also educate on complementary feeding for children aged 6-23 months, postnatal care, and Infant and Young Child Feeding (IYCF). The campaign involves engaging family members, such as mothers-in-law and husband, to ensure a supportive environment, with follow-up visits emphasizing the importance of sustaining behavioural changes.

**Home Visits for Targeted Health and Nutrition Counselling:** JEEVIKA's home visit approach is a comprehensive strategy designed to provide personalized support and counselling to vulnerable households. During these visits, the Health Sub Committee (VO-HSC) of the Village Organization (VO), along with the Community Mobilizer (CM), identify and focus on households with pregnant women, recently delivered mothers, newly born children, newly married women, and those lacking access to sanitary toilets. Collaborating with field-level workers like ASHA and Anganwadi Workers (AWW), they visit these homes to offer targeted counselling.

For pregnant women the counselling emphasizes birth preparedness and early initiation of breastfeeding. Recently delivered mothers receive guidance on the

importance of exclusive breastfeeding. Mothers of children aged 5-6 months are informed about the initiation of complementary feeding and the importance of a diversified diet for their children. The visits also cover a broad range of topics including Agri-Nutrition Linkage, family planning, identification of high-risk women, menstrual hygiene, adolescent health, and anemia prevention. Additionally, influential family members, such as mothers-in-law and husbands, are engaged in these sessions to ensure they support the adoption of these new practices, thereby enhancing the overall impact of the interventions.

#### **Kitchen Garden Practice:**

Kitchen gardening holds significant importance, especially in rural settings, where it empowers households to cultivate their own fresh vegetables right at their doorstep. For SHG women mobilized by JEEVIKA, kitchen gardens provide a sustainable source of fresh, organic vegetables and fruits, enhancing food security and reducing dependency on market-bought vegetable. JEEVIKA has successfully initiated kitchen gardens in 20.61 lakh households, demonstrating its wide-reaching impact. These gardens not only contribute to improved dietary diversity and nutritional intake but also offer a cost-effective way to ensure families have access to essential vitamins and minerals. Additionally, kitchen gardens promote self-reliance and can serve as a small income source through the sale of surplus produce, further strengthening the economic stability of SHG households. By integrating kitchen gardening into their daily lives, SHG women ensure better health, economic resilience, and environmental sustainability within their communities.

**Impact:** The FDDC has led to a significant increase in the campaign's reach, expanding from 27% to 40% among lactating women and from 28% to 42% among pregnant women. Home visits have proven to be one of the most effective outreach activities. While high levels of knowledge about Timely Introduction of Complementary Feeding and Exclusive Breastfeeding (EBF) were observed, awareness of continued breastfeeding alongside complementary feeding remains lower, with only half of the women informed. Despite overall gains, only 13% of lactating mothers were familiar with the seven prescribed food groups for young children, and participation in modular sessions by lactating and pregnant women was found to be low, indicating the

need for further engagement and education.

### Sustainable Health and Sanitation Practices

JEEVIKA's health and sanitation initiatives focus on sustainable practices that ensure long-term benefits for rural communities.

#### Health Risk Fund (HRF):

**Overview:** The HRF is a crucial financial support mechanism for SHG women facing health crises. This fund, distributed directly to Village Organizations (Vos), provides up to 1 lakh per SHG member in need. It allows multiple SHG members to access funds simultaneously, ensuring that financial barriers do not impede necessary medical care.

**Impact:** Till date, 157,400 SHGs have benefited from the HRF, receiving a total of 243.88 crore. This support has been instrumental in enabling timely access to healthcare services and managing health emergencies effectively.

#### Food Security Fund (FSF):

**Overview:** The FSF supports SHG women in purchasing essential food items for daily consumption. This fund is crucial for ensuring food security and improving nutritional intake at the household level.

**Impact:** 368,025 SHGs have received 645.64 crore through the FSF, which has enhanced food security and provided access to a diverse range of food items. This initiative helps families maintain a balanced diet and improve their overall health.

**Annaprasan Diwas:** VO support to ASHA/AWW through mobilizing the mothers of children aged 6-8 months to initiate timely complementary feeding and participate in Annaprasan Diwas with their children and family.

**Poshan Maah:** During the Poshan Maah, the Village Organisation organise various activities and the village level such as Rally, Rangoli Competition, identification of households having best dietary practice, etc.

**The HNS enterprise fund:** It is available for both individual and group enterprise, as mentioned below: Individual Enterprise includes the followings:

- Nutri Snack Production Unit

- Green grocery shop
- Nutri shop
- Egg Shop and cart
- Nutrition Sensitive Integrated Farming System
- Nutri Snacks Shop

The Group Enterprise includes the followings:

#### Sanitary Napkin Production Unit (SNPU):

JEEVIKA took the lead in establishing the Sanitary Napkin Production Unit (SNPU) in the Chausa block of Buxar District with the support of Satluj Jal Vidyut Nigam (SJVN) and Buxar District Administration. The objective of SNPU is to supply environment friendly, hygienic, and cost-effective sanitary pads to women of all targeted segments. This compostable product is made with the combination of biodegradable materials, including a non-woven upper sheet, core-patti, wood pulp, barrier sheet, construction glue, and non-woven with a release liner. Beyond improving menstrual health, the provision of affordable sanitary napkins also creates employment opportunities for women in rural areas. This initiative holds significant values in regions with limited awareness and resources, as it addresses health risks associated with inadequate menstrual hygiene practices. JEEVIKA's commitment extends to promote good hygiene practices and empowering women through entrepreneurial models, aiming to eliminate stigma and taboos related with menstruation. This initiative contributes to the overall well-being of women and the environment. Notably, the materials used in napkin production are entirely organic.

**Balahaar:** Balahaar, a traditional nutritional supplement, plays a crucial role in providing essential vitamins and minerals for the development of children. In Samastipur, JEEVIKA didis have taken the lead in producing Balahaar using locally sourced ingredients. The scientific formulation, overseen by Dr. Usha Singh, Samastipur, ensures its quality, with green gram contributing to its iron content, promoting optimal health. Those interested can easily purchase Balahaar from the production unit in Samastipur. Through this initiative, JEEVIKA aims to encourage complementary feeding and contribute to the overall well-being and healthy growth of children. Ingredients of Balahaar: Balahaar composition per 100g packet includes: 45g Processed Wheat Flour, 11g Processed Moong Dal Flour, 18g Whole Milk Powder, 24g Powdered Sugar, and 2g Ghee.



## Building Futures: Education & Skill Development for Empowerment

Bihar Rural Livelihoods Promotion Society (BRLPS), JEEVIKA, a leading force in rural empowerment, is dedicated to uplifting the lives of the poor in Bihar. As an autonomous body under the Department of Rural Development, JEEVIKA works tirelessly to create opportunities for sustainable economic growth of the Individual. Through collaboration and partnerships with the Ministry of Rural Development, JEEVIKA provides crucial support for self-employment, skilled wage employment, and Industry based education to compete the market needs. By equipping individuals with the necessary skills and knowledge, JEEVIKA empowers them to build brighter futures.

JEEVIKA is committed for poverty alleviation through building, supporting and sustaining institutions and enhancing their livelihoods. It has a strong belief in the innate capabilities of the poor and would like to

complement them with capacities (information, knowledge, skills, tools, finance and collectivisation) to deal with the rapidly changing external world.

JEEVIKA approach is centred on four pillars: social mobilization, financial inclusion, vulnerability reduction, and livelihood enhancement. This comprehensive strategy ensures that the program addresses the multifaceted challenges faced by rural communities. With a focus on skill development through initiatives like DDU-GKY and RSETIs, JEEVIKA is transforming lives and fostering a more equitable society.”

JEEVIKA is a catalyst for change, empowering the poor to overcome poverty and build sustainable livelihoods. By fostering strong institutions and providing essential support, JEEVIKA unlocks the immense potential within rural communities tasked with the dual objectives of

adding diversity to the incomes of rural poor families and cater to the career aspirations of rural youth.

JEEVIKA believes in the inherent strength and resilience of the poor. To equip them for a rapidly evolving world, JEEVIKA equips them with the necessary tools, knowledge, skills, and resources, enabling them to thrive and achieve their goals.”

JEEVIKA, a leading force in rural empowerment, plays a pivotal role in implementing both the Deen Dayal Upadhyaya Grameen Kaushalya Yojana (DDU-GKY) and Rural Self-Employment Training Institutes (RSETIs) in Bihar. As the nodal agency for both programs, JEEVIKA leverages its expertise and resources to provide comprehensive support to rural youth. DDU-GKY focuses on providing diverse income-generating opportunities, while RSETIs offer specialized training in various trades for self employment and enterprise development. DDU-GKY and RSETI have been instrumental in transforming the lives of rural youth in Bihar. By providing them with the necessary skills and support, these initiatives have enabled them to Secure gainful employment: Many rural youths have found employment in various industries after completing training programs under DDU-GKY. Many of trained youth under RSETI have started their own businesses.

JEEVIKA's coordinated approach ensures that rural youth receive the necessary skills, knowledge, and support to build sustainable livelihoods. By working closely with project implementing agencies, district managers, and leading banks, JEEVIKA creates pathways for economic growth and empowerment in rural communities.”

As on 17th August 2024, 83513 candidates received training from DDU-GKY on different trades and 44337 placements in different organizations.

As on 17th August 2024, 313711 candidates received training from RSETI on different trades and 229481 got Settled after training.

It is delighted to share some inspiring case studies that demonstrate the transformative impact of education and skill development initiatives in Bihar with special focused on disadvantaged groups such as the SC/ ST/ women/ minorities and people with disability (PWD); it focuses on market-led training programs to ensure the

employability of youth and it emphasizes on partnerships with the private sector.

Below two examples showcase how these DDU-GKY & RSETIs programs are empowering individuals, fostering social change, and driving positive development throughout the state. “This approach guarantees that the skills acquired by trainees are relevant and in market demand.

### **DDU-GKY Case Study: Manish Kumar: Beginnings from Rural Village to Royal Caribbean Cruise USA**

Growing up in a small village in Bhojpur district, Bihar, Manish faced daily challenges. His father, a hardworking farmer, struggled to provide daily needs of the family. Undeterred, Manish stepped up to help, putting in extra hours to ease the burden.

Despite their limited resources, Manish completed his 12th standard, dreaming of a brighter future. A ray of hope arrived when he enrolled in the Food & Beverage trade under DDU-GKY Training Program offered by Bhartiya Samruddhi Investments and Consulting Services Ltd.

The program proved to be a turning point in Manish's life. Not only did he acquire valuable skills in the hospitality industry, but also overcame his shyness and developed strong communication skills.

Manish's hard work paid off when he landed his first job at RED FOX in Hyderabad, earning a monthly salary of Rs. 12,000. Driven by ambition, he continued to hone his skills and eventually secured a position at the renowned Al Tarbouch Al Soory restaurant in Dubai, where he earned an impressive salary of around Rs. 70,000 per month.

Building on his international experience, Manish joined Royal Caribbean International USA, further boosting his earnings to approximately Rs. 1,20,000 per month.

Manish attributes his success to JEEVIKA, DDU-GKY program, which not only equipped him with skills but also instilled in him the confidence to pursue his dreams. He is in position to provide a better life to his family and inspire others to overcome challenges and achieve their goals.

## RSETI Case Study – “Nisha's Journey from Dream to Reality: A Tale of Resilience and Empowerment”

Nisha harboured a dream of pursuing higher education and securing a government job. However, due to family circumstances, her aspirations seemed out of reach. After marrying Sri Umesh Kumar Singh and settling in Bishunpur Bande, she faced further challenges as her husband's income as a daily wager struggled to meet their basic needs.

Despite the hardships, Nisha refused to let her dreams fade. She persevered through her studies and completed her graduation. Recognizing the importance of skills in today's competitive job market, she sought out opportunities to develop her expertise.

Through the guidance of a former trainee, Nisha discovered RUDSETI Hajipur and its programs. Determined to improve her family's circumstances, she enrolled in a beauty-related training program. During the training, Nisha not only acquired valuable skills in the field of beauty and makeup but also developed essential soft skills like communication and self-confidence.

Upon completing the program, Nisha confidently started her home-based beauty parlour. With her initial savings, she was able to start her business and open a full-fledged beauty Parlour, Nisha's entrepreneurial journey received a significant boost when she secured a 10-lakh loan under the PMEGP scheme from Canara Bank. Today, she successfully operates her beauty parlour and even shares her expertise as a trainer at RSETIs. She also supported her husband to open s cosmetic shop. Currently her income is more than 25000 per months.

Nisha's story is a testament to the power of resilience, determination, and skill development. Through her hard work and dedication, she thanks JEEVIKA & RUDSETI for transformed her life and is inspiring others in her community.





# महिलाओं की शिक्षा और आर्थिक स्वतंत्रता: समाज में आया सकारात्मक बदलाव

देश के एक प्रमुख राज्य के रूप में बिहार ऐतिहासिक, सांस्कृतिक और सामाजिक दृष्टिकोण से महत्वपूर्ण स्थान रखता है। एक दौर था जब यहाँ की महिलाएँ पारंपरिक दृष्टिकोणों, सामाजिक विभेदों और अवसरों की अनुपलब्धता के बीच मुश्किलों के दौर से गुजर रही थीं। हाल के वर्षों में राज्य सरकार के प्रयासों ने महिलाओं की शिक्षा, स्वास्थ्य, स्वरोजगार और आर्थिक स्वतंत्रता में सुधार कर समाज में सकारात्मक बदलाव लाने का कार्य किया है। सरकार के प्रयासों का नतीजा आज हमारे सामने है। बिहार की महिलाएँ आज अपने सशक्तीकरण के कारण पूरे देश में नज़ीर बन चुकी हैं।

जैसा हम जानते हैं कि महिलाओं की शिक्षा और आर्थिक स्वतंत्रता समाज में व्यापक और स्थायी सकारात्मक बदलाव लाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है, और इस बात को बिहार सरकार ने अपने कार्यों की प्राथमिकता में शामिल किया। अगर हम बिहार के संदर्भ में महिलाओं की शिक्षा की बात करें तो पिछला एक दशक महिला शिक्षा में क्रांतिकारी एवं सार्थक बदलाव साबित हुआ है। राज्य सरकार की विभिन्न योजनाओं ने महिला शिक्षा के क्षेत्र में बड़ा परिवर्तन लाने का कार्य किया है। बालिका शिक्षा योजना, मिड-डे मील, साईकिल एवं पोशाक योजना, स्टूडेंट क्रेडिट कार्ड जैसी योजनाएँ विशेष रूप से ग्रामीण क्षेत्रों में लड़कियों की स्कूल में उपस्थिति बढ़ाने

एवं ठहराव में सहायक रही हैं।

राज्य में शिक्षा के प्रति जागरूकता का यह असर है कि आज महिला हों या पुरुष सभी महिला शिक्षा के प्रति जागरूक हैं। वे इस बात को जानते हैं कि महिलाओं की शिक्षा परिवार एवं समाज के विकास की नींव होती है। जब महिलाएँ शिक्षित होती हैं, तो वे अपने स्वास्थ्य, परिवार और समुदाय की भलाई के लिए बेहतर निर्णय ले सकती हैं। शिक्षा से महिलाओं को अपने अधिकारों और अवसरों के बारे में जानने का अवसर मिलता है, जिससे वे सामाजिक और पेशेवर क्षेत्र में सक्रिय रूप से भाग ले पाती हैं। आज बिहार की कुल साक्षरता दर 69.83 प्रतिशत है। पुरुष और महिला साक्षरता दर क्रमशः 70.32 प्रतिशत और 53.57 प्रतिशत है। कुल ग्रामीण साक्षरता दर 43.9 प्रतिशत है। बिहार के ग्रामीण क्षेत्रों में पुरुष और महिला साक्षरता दर क्रमशः 57.19 प्रतिशत और 29.6 प्रतिशत है। कुल शहरी साक्षरता दर 71.9 है। बिहार के शहरी इलाकों में पुरुष और महिला साक्षरता दर क्रमशः 79.9 प्रतिशत और 62.6 प्रतिशत है। बिहार में कुल साक्षरों की संख्या 3,16,75,607 है, जिसमें 2,09,78,955 पुरुष और 1,06,96,652 महिलाएँ हैं। (नोट—उक्त आंकड़े वर्ष 2011 के अनुसार हैं।)

जीविका सहयोगी प्रथम संस्था द्वारा हाल ही में किए गए एक सर्वेक्षण में बिहारी बच्चों की शिक्षा के प्रति ग्रहणशीलता को

अन्य राज्यों के बच्चों से बेहतर बताया गया है। महिला शिक्षा की स्थिति भी इस सर्वे में उल्लेखनीय माना गया है। बिहार महिला साक्षरता को बढ़ाने का प्रयास कर रहा है, जो अब 53.57 प्रतिशत है। स्वतंत्रता के समय बिहार में महिला साक्षरता दर महज 4.22 प्रतिशत थी। बिहार सरकार के केंद्रित प्रयासों के माध्यम से महिला साक्षरता में उल्लेखनीय प्रगति हुई है, यह हम शिक्षा की वार्षिक स्थिति रिपोर्ट, 2022 के अनुसार देख सकते हैं। इस रिपोर्ट में स्कूलों में नामांकित न होने वाली 15-16 वर्ष की लड़कियों की संख्या 2006 में जहां 28.2 प्रतिशत थी जो घटकर 2022 में मात्र 6.7 प्रतिशत रह गयी है।

महिलाओं की आर्थिक स्वतंत्रता उन्हें आत्मनिर्भर बनाती है। जब महिलाएं स्वावलंबी होती हैं, तो वे आर्थिक रूप से परिवार और समाज के विकास में अपना योगदान करती हैं। आर्थिक रूप से सशक्त महिलाएं अपने परिवार की आर्थिक, सामाजिक स्थिति सुधारने में सहयोग प्रदान करती हैं। आर्थिक स्वावलंबन ना केवल महिलाओं के जीवन को ही, बल्कि उनके परिवार और समाज के समग्र विकास को भी प्रभावित करता है। महिलाओं की शिक्षा और आर्थिक स्वतंत्रता सामाजिक संरचनाओं और विभेदों को चुनौती देती है और समानता की दिशा में महत्वपूर्ण कदम उठाती है। इससे लैंगिक भेदभाव कम होता है और समाज में समान अवसरों की उपलब्धता सुनिश्चित होती है। शिक्षित और आर्थिक रूप से स्वतंत्र महिलाएं अपने और अपने परिवार के स्वास्थ्य के प्रति अधिक सजग होती हैं। वे बेहतर स्वास्थ्य देखभाल सेवाओं का लाभ उठाती हैं और स्वस्थ जीवनशैली को अपनाती हैं, जिससे समाज में समग्र स्वास्थ्य स्तर में सुधार होता है। महिलाओं की शिक्षा और रोजगार में भागीदारी से राज्य एवं देश की अर्थव्यवस्था को लाभ होता है। जब महिलाएं विभिन्न स्वरोजगारों, उद्यमों और उद्योग क्षेत्रों में योगदान करती हैं, तो यह आर्थिक विकास को और भी ज्यादा गति प्रदान करती हैं, साथ ही साथ रोजगार के नए अवसरों का सृजन भी करती हैं।

जहां तक महिलाओं के आर्थिक स्वतंत्रता एवं सशक्तीकरण की बात है तो उसमें जीविका समूहों की महत्वपूर्ण भूमिका है। बिहार में महिलाओं के स्वयं सहायता समूहों का विकास आर्थिक सशक्तीकरण का एक प्रमुख कारक साबित हुआ है। समूह की महिलाओं में छोटी-छोटी बचतों को बढ़ावा देने के साथ बैंकों के साथ जुड़ाव के द्वारा स्वरोजगार एवं उद्यमिता का अवसर प्रदान करती है। इसी प्रकार कौशल विकास मिशन, मिशन

शक्ति, डीडीयूजीकेवाई, आरसेटी और मनरेगा जैसी योजनाएँ महिलाओं को कौशल विकास और रोजगार के अवसर प्रदान कर रही हैं।

महिलाओं की शिक्षा और आर्थिक स्वतंत्रता से जहां उनके स्वास्थ्य में सुधार हुआ है, वहीं वे अपने परिवार और समाज की बेहतरी के लिए कार्य करने लगी हैं। शिक्षा प्राप्त महिलाएं जहां बेहतर स्वास्थ्य देखभाल की जानकारी रखती हैं और परिवार की स्वास्थ्य समस्याओं को बेहतर तरीके से संभालती हैं, इसके साथ ही अपने बच्चों को भी शिक्षा से जोड़ने में कोताही नहीं बरतती। महिलाओं की आर्थिक स्वतंत्रता ने लैंगिक भेदभाव और दहेज जैसी कुप्रथाओं को भी कम किया है। महिलाएँ अब समाज में अधिक सक्रिय भूमिका निभा रही हैं, जिससे सामाजिक धारणाओं और पूर्वाग्रहों में बदलाव आ रहा है।

बिहार में महिलाओं की शिक्षा और आर्थिक स्वतंत्रता ने समाज में महत्वपूर्ण एवं सकारात्मक बदलाव लाने का कार्य किया है। शिक्षा और आर्थिक स्वतंत्रता न केवल व्यक्तिगत विकास की कुंजी है, बल्कि समाज की प्रगति और आर्थिक समृद्धि के लिए भी अत्यंत महत्वपूर्ण है। सरकारी योजनाओं, सामाजिक सहयोग और व्यक्तिगत प्रयासों के माध्यम से महिला शिक्षा और आर्थिक स्वतंत्रता को और ज्यादा गति प्रदान की जा रही है। महिलाओं का सशक्तीकरण समाज के समग्र विकास के लिए अनिवार्य हैं। इसलिए, महिलाओं की शिक्षा और आर्थिक स्वतंत्रता को बढ़ावा देने के लिए निरंतर प्रयास किए जाने चाहिए, ताकि एक समान और समृद्ध समाज का निर्माण हो सके।





# मतदाता जागरूकता एवं नागरिक सहभागिता: जीविका का प्रयास

जीविका दीदियों द्वारा समाज में सुधार लाने के लिए निरंतर प्रयास किया जाता रहा है, जिसमें मतदाता जागरूकता अभियान भी शामिल है। बिहार में विगत एक दशक से जीविका दीदियां लोक सभा एवं बिहार विधान सभा चुनाव के अवसर पर मतदाता जागरूकता अभियान चलाकर लोकतंत्र की नींव को सशक्त करने में अपना योगदान दिया है। जीविका दीदियों ने अपने अथक प्रयासों से मतदाताओं में मतदान के प्रति जागरूकता और मतदान में भागीदारी को नई ऊँचाइयों पर पहुंचाया है। जीविका समूहों की दीदियों ने मतदाता जागरूकता अभियान चलाकर न केवल मतदाताओं को शिक्षित किया है, बल्कि उन्हें सशक्त भी बनाया है। जीविका दीदियों द्वारा संचालित मतदाता जागरूकता अभियानों से ग्रामीण क्षेत्र के लोगों में मतदान के प्रति जागरूकता बढ़ी है। चुनावों में महिलाओं का बढ़ता मतदान प्रतिशत इस बात की ओर भी संकेत करता है कि चुनाव प्रणाली एवं निर्वाचन प्रक्रिया में जनमानस का भरोसा बढ़ रहा है। जीविका सामुदायिक संगठनों

द्वारा निरंतर चलाए गए जन जागरूकता अभियानों से समाज में कभी कमजोर समझे जाने वाले समुदाय को भी ताकत मिला जिससे वे निर्भिक होकर अपने मताधिकार का प्रयोग करने लगे हैं जिसमें महिलाएं भी शामिल हैं। इससे मतदाताओं में यह विश्वास कायम हुआ है कि चुनाव के दौरान मतदान की प्रक्रिया स्वच्छ और निष्पक्ष ढंग से संपन्न हो रही है। यह विश्वास ही मतदाताओं की संख्या में वृद्धि और मतदाता बनने के प्रति आकर्षण का प्रमुख आधार है। निर्भय और गोपनीय मतदान बहुत सहज हो गया है।

दीदियों द्वारा मतदाता पहचान पत्र बनाने, उसमें सुधार करवाने के लिए भी व्यापक रूप से प्रचार-प्रसार किया जाता रहा है। सुव्यवस्थित मतदाता शिक्षा एवं निर्वाचक सहभागिता कार्यक्रम, स्वीप के रूप में अधिक जाना जाता है। यह भारत में मतदाता शिक्षा, मतदाता जागरूकता का प्रचार-प्रसार करने एवं मतदाता की जानकारी बढ़ाने के लिए एक प्रमुख कार्यक्रम

है। मतदाता जागरूकता अभियान एक महत्वपूर्ण पहल है जो लोकतंत्र की मजबूती के लिए आवश्यक है। यह अभियान लोगों को मतदान के महत्व के बारे में जागरूक करता है और उन्हें वोट डालने की प्रक्रिया के बारे में शिक्षित करता है। इस कार्यक्रम के तहत जीविका दीदियों के द्वारा विभिन्न गतिविधियों के माध्यम से लोगों को लोकतंत्र में भाग लेने के जागरूक एवं प्रेरित किया जाता है।

स्वीप कार्यक्रम के अन्तर्गत जीविका दीदियों द्वारा निरंतर चलाए गए मतदाता जागरूकता अभियानों और उनकी सहभागिता की वजह से महिलाओं में मतदान के प्रति जागरूकता बढ़ी है। जीविका दीदियों ने ग्रामीण क्षेत्रों में मतदाता शिक्षा एवं निर्वाचक सहभागिता में उल्लेखनीय भूमिका निभाई है। इन्होंने अपने अथक प्रयासों और समर्पण से मतदाताओं के साथ-साथ आम लोगों को भी मतदान के प्रति जागरूक एवं सजग किया है। जीविका दीदियों ने स्वीप कार्यक्रम के तहत निरंतर मतदाता जागरूकता अभियान चलाकर मतदाताओं को शिक्षित एवं जागरूक किया है तथा उन्हें लोकतांत्रिक मूल्यों के प्रति सजग किया है। साथ ही जीविका दीदियां लोकतांत्रिक प्रक्रिया में भी अपनी महत्वपूर्ण योगदान दे रही हैं। सामुदायिक सेवा के प्रति उनके समर्पण ने लोगों को एकजुट करने में अहम भूमिका निभाई है। यह उन्हें सही निर्णय लेने में मदद करता है और सोच-समझकर वोट डालने के महत्व को समझाता है। ग्रामीण क्षेत्रों में मतदाता जागरूकता का स्तर बढ़ाने के लिए सामुदाय आधारित संगठनों के नेतृत्व में जागरूकता रैलियों की एक श्रृंखला आयोजित की गई। इसमें बड़ी संख्या में जीविका दीदियां और आम लोग शामिल हुए। इस दौरान प्रेरक नारों एवं गीतों से लोगों को मतदान करने एवं लोकतंत्र में भागीदारी निभाने हेतु प्रेरित किया गया। इसके माध्यम से मतदाताओं को मतदान के महत्व एवं इसकी प्रक्रिया के बारे में प्रभावी ढंग से शिक्षित भी किया गया।

लोकतंत्र को मजबूत करने की दिशा में सक्रिय भूमिका निभाते हुए इन्होंने स्वीप के तहत विभिन्न अभियानों एवं गतिविधियों का संचालन किया। इससे समाज में सकारात्मक संदेश गया और लोकतंत्र में उनकी भागीदारी बढ़ी। बहरहाल अपने अनूठे कार्यों से सबका ध्यान आकर्षित करने वाली जीविका दीदियां अब समाज को नई दिशा दे रही हैं। लोक सभा एवं बिहार विधान सभा चुनाव के अवसर पर बिहार के ग्रामीण क्षेत्रों में

मतदाता शिक्षा एवं निर्वाचक भागीदारी को बढ़ावा देने के लिए स्वीप (सुव्यवस्थित मतदाता शिक्षा और निर्वाचक भागीदारी) कार्यक्रम के अंतर्गत जीविका दीदियों द्वारा व्यापक मतदाता जागरूकता अभियानों एवं विभिन्न गतिविधियों का संचालन किया जाता रहा है। जीविका के स्वयं सहायता समूहों, ग्राम संगठनों और संकुल स्तरीय संघों द्वारा स्वीप के तहत मतदाताओं को जागरूक के लिए विभिन्न तरह के गतिविधियों का आयोजन किया जाता है। इन सामुदायिक संगठनों के नेतृत्व में जीविका दीदियों के द्वारा मतदाता जागरूकता रैली, प्रभात फेरी, संकल्प सभा, चुनाव चौपाल, संगोष्ठी, कैंडिल मार्च, शपथ ग्रहण, मानव श्रृंखला, रंगोली एवं मेहंदी प्रतियोगिता, हस्ताक्षर अभियान एवं घर-घर दस्तक जैसी गतिविधियों का आयोजन कर मतदाताओं को मतदान हेतु प्रेरित किया गया है। जीविका के सामुदायिक संगठनों के माध्यम से मतदान के लिये प्रेरित करने के साथ-साथ मतदाताओं को मतदान में अपने निर्णय को भली-भांति अपने विवेक सम्मत बनाने एवं बिना किसी के दबाव एवं बिना किसी लालच के मतदान करने की अभिरुचि विकसित करने का भी प्रयास किया जाता रहा है। राज्य में लगातार महिला मतदाताओं की भागीदारी बढ़ती जा रही है, जो जीविका दीदियों द्वारा संचालित मतदाता जागरूकता अभियान का परिणाम है।

इस तरह, जीविका दीदियों द्वारा संचालित मतदाता जागरूकता अभियानों ने समाज में मतदान के प्रति जागरूकता फैलाकर लोकतंत्र की मजबूती में महत्वपूर्ण भूमिका निभाया है।





# सतत् जीविकोपार्जन योजना सामाजिक परिवर्तन की बयार

बिहार सरकार की महत्वाकांक्षी सतत् जीविकोपार्जन योजना का क्रियान्वयन बिहार ग्रामीण जीविकोपार्जन प्रोत्साहन समिति, जीविका द्वारा किया जा रहा है। इस योजना के अंतर्गत अत्यंत निर्धन परिवारों का आजीविका संवर्धन, क्षमता निवारण तथा आर्थिक एवं सामाजिक सशक्तिकरण किया जा रहा है।

राज्य के अत्यंत गरीब परिवारों के आर्थिक एवं सामाजिक सशक्तिकरण में राज्य सरकार की यह योजना धरातल पर अक्षरतः अपने सफलता के अन्य आयाम भी तय कर रही है। गाँव से लेकर शहर तक के अत्यंत गरीब परिवारों के महिला मुखिया को ग्राम संगठन के अनुमोदन के बाद योजना से जोड़कर उन्हें स्वरोजगार कराते हुए उनकी गरीबी दूर की जा रही है। चिन्हित परिवारों को वित्तीय सहयोग देते हुए सूक्ष्म व्यवसाय, गव्य, बकरी एवं मुर्गी पालन से जोड़ा गया है। इसके लिए उन्हें प्रशिक्षण भी प्रदान किया जाता रहा है। वित्तीय पोषण, प्रशिक्षण एवं उसके बाद किये गए स्वरोजगार के व्यापक परिणाम मिले। देशी शराब एवं ताड़ी के उत्पादन एवं बिक्री में पारंपरिक रूप से जुड़े अत्यंत निर्धन परिवार तथा अनुसूचित जाति, जनजाति एवं अन्य समुदायों के लक्षित अत्यंत निर्धन परिवार अब आर्थिक स्वावलंबन के साथ ही समाज में मान-सम्मान पा रहे हैं। गरीबी उन्मूलन एवं आर्थिक एवं सामाजिक उन्नति की प्रक्रिया निरंतर जारी जारी है।

सतत् जीविकोपार्जन योजना बिहार ग्रामीण जीविकोपार्जन प्रोत्साहन समिति, जीविका द्वारा ग्रामीण क्षेत्रों में 26 अप्रैल 2018 से संचालित है। ग्रामीण क्षेत्रों में योजना के सफल क्रियान्वयन एवं सफलता के बाद राज्य सरकार ने इसे शहरी क्षेत्रों में भी क्रियान्वयन की योजना बनाई। ग्रामीण विकास विभाग, बिहार सरकार ने ग्रामीण क्षेत्रों के साथ ही शहरी क्षेत्रों में विस्तार हेतु संकल्प ज्ञापन 1409922 दिनांक 01.12.2022 को दिया। लिहाजा अब गरीबी उन्मूलन की प्रक्रिया शहरी क्षेत्रों में भी सफलता की गाथा लिखने जा रही है। परत दर परत वित्तीय पोषण एवं सहयोग से गाँव एवं शहर की गरीबी दूर हो रही है। बदलाव की बयार गरीबी उन्मूलन एवं नशा उन्मूलन में बह रही है। गरीबी रेखा से नीचे गुजर-बसर करने वाले एवं देशी शराब एवं ताड़ी उत्पादन एवं बिक्री से जुड़े परिवार भी अब अपने जीवन में आये बदलाव को महसूस कर रहे हैं। सतत् जीविकोपार्जन

योजना से लाभान्वित हुए श्रीमती लाली देवी बताती हैं कि सतत् जीविकोपार्जन योजना से जुड़कर उनका जीवन और रहन-सहन बदल गया है। व्यवसाय के लिए छत पशुपालन के लिए शोड भी उपलब्ध कराये जा रहे हैं। राशन कार्ड से लेकर बी.पी.एल कार्ड समेत कई सरकारी योजनाओं का लाभ उन्हें मिल रहा है। बढ़ते क्रम में अब लाभान्वित सदस्यों का बीमा भी होने लगा है। यह एक सामाजिक परिवर्तन है।

बिहार सरकार द्वारा सतत् आजीविका, क्षमता निर्माण एवं वित्तीय सहायता के माध्यम से सामाजिक बदलाव एवं आर्थिक सशक्तिकरण हेतु सतत् जीविकोपार्जन योजना संचालित है। कल तक समाज की मुख्य धारा से वंचित अत्यंत गरीब परिवार अब मुख्य धारा में शामिल होकर आर्थिक एवं सामाजिक उत्थान की ओर निरंतर अग्रसर है। ये वो परिवार हैं जो देशी शराब निर्माण एवं ताड़ी व्यवसाय से जुड़े हुए थे। अब वही परिवार सतत् जीविकोपार्जन योजना से जुड़कर अपने रूचि के अनुरूप स्वरोजगार करते हुए समाज के विकास में अब अपना योगदान दे रहे हैं। इस योजना को अमलीजामा की जिम्मेवारी जीविका की है। जीविका ने सतत् जीविकोपार्जन योजना के तहत लक्षित परिवार का चयन कर उन्हें योजना से जोड़ कर लाभान्वित करते हुए आर्थिक रूप से सशक्त बनाने का कार्य भी शुरू कर दिया और इसके सापेक्षित परिणाम भी सामने आने लगे हैं।

वित्तीय वर्ष 23-24 से सतत् जीविकोपार्जन योजना के अंतर्गत चयनित परिवारों को दो लाख रुपये क्रमशः देने का प्रावधान किया गया है। इस प्रवधान के तहत विशेष निवेश निधि के तहत 10 हजार रुपया एवं जीविकोपार्जन निवेश निधि के अंतर्गत 50 हजार रुपये की राशी दी जा रही है। व्यवसाय या बकरीपालन के लिए शेष 1 लाख चालीस हजार रुपये की राशी क्रमशः दी जाएगी। पूर्व में 33 हजार और 37 हजार रुपये की राशी प्राप्त लाभुकों को दी जाती थी।

बिहार की तस्वीर बदली है। इसके पीछे कड़ी मेहनत और पूरी पारदर्शिता से अत्यंत गरीब परिवार का चयन कारगर कदम रहा है। बिहार ग्रामीण जीविकोपार्जन प्रोत्साहन समिति (जीविका) द्वारा संचालित सतत् जीविकोपार्जन योजना ने उन्हें जीने की राह दिखाई एवं सिखाई है।

सतत् जीविकोपार्जन योजना से लाभान्वित होकर हजारों परिवार गरीबी रेखा से बाहर निकलकर आर्थिक एवं सामाजिक सम्पन्नता की ओर अग्रसर हैं। स्वरोजगार करते हुए लाभान्वित परिवार की मासिक आमदनी 10 हजार रुपये से भी ज्यादा है। उनकी परिसंपत्ति महज तीन

से चार साल में लाख रुपये से ज्यादा हुई है। उनकी पहचान गाँव में लखपतिया दीदी के रूप में बन रही है। सामाजिक परिवर्तन के तहत यह एक मौन क्रांति है।

सतत् जीविकोपार्जन योजना से लाभान्वित परिवार स्वरोजगार एवं व्यवसाय करते हुए अपने सपनों को साकार कर रहे हैं। सूक्ष्म व्यवसाय से आमदनी बढ़ी है और मुनाफ़ा की राशी से झोपड़ियाँ पक्के मकान में तब्दील हो रहे हैं और कल तक गन्दी बस्तियाँ में अपने दिन गुजरने वाले बच्चे- बच्चियाँ स्कूल जाने लगे हैं। सूक्ष्म व्यवसाय अब बड़े व्यवसाय में तब्दील हो रहे हैं। गरीबी उन्मूलन के साथ ही महिला स्वावलंबन एवं सशक्तिकरण सफलता के नए आयाम पेश कर रहे हैं। सतत् जीविकोपार्जन योजना से लाभान्वित हुए कई परिवार अब एक से अधिक व्यवसाय कर रहे हैं। 5 बकरी से बकरी पालन का सफ़र अब दो दर्जन से अधिक बकरियों एवं पाठा के साथ उतरोत्तर वृद्धि की ओर है। गाय पालन के साथ ही दुग्ध व्यवसाय भी मुनाफा दे रहा है। सबसे बड़ी बात कि नशा मुक्त बिहार का सपना भी सतत् जीविकोपार्जन योजना ने साकार किया है। ताड़ी एवं देशी शराब उत्पादन से जुड़े परिवार अब अपने पुश्तैनी एवं पारंपरिक व्यवसाय से इतर स्वरोजगार करते हुए समाज में मान-सम्मान भी पा रहे हैं।





# Addressing Gender Challenges: Programs and Impact

Gender disparities in India remain a significant barrier to achieving true equality. Despite progress, structural and societal barriers continue to limit women's opportunities across various domains. For instance, in education, girls represent 48% of the school population, yet they face higher dropout rates at the secondary level and continue to lag behind in literacy rates compared to men. In politics, despite having voting rights since 1952, women hold only 14% of the seats in the 18th Lok Sabha and a mere 9% in State Assemblies. The proposed 106th Constitutional Amendment, which seeks to reserve one-third of legislative seats for women by 2029, offers a potential turning point, but the road to gender parity remains challenging.

Gender challenges in India are deeply rooted in patriarchal norms, which manifest as societal, structural, and educational barriers that disproportionately hinder women's opportunities and advancement. Addressing these challenges is not just a matter of equity; it's crucial for fostering inclusive and sustainable development. Programs aimed at tackling gender challenges must be multifaceted, addressing issues from education and economic empowerment to violence and political representation.

In the shared pursuit of Gender Bihar Rural Livelihoods Promotion Society (BRLPS) – in collaboration with the technical partners Centre for Catalysing Change (C3) and PRADAN embarked on the transformative journey to integrate gender mainstreaming strategies across Bihar. The core objective of this initiative is to address gender challenges, highlighting their impact on

empowering rural women economically and socially. Through initiatives like the Didi Adhikar Kendra (Gender Resource Centers) and collaborations with the Women and Child Development department, JEEVIKA has made significant strides in providing critical support to women facing gender-based violence and ensuring their access to social entitlements.

## Key Activities:

### Gender Resource Centers

JEEVIKA, with support from national gender experts and NRLM, undertook a comprehensive Needs Assessment to inform its Gender Operational Strategy. This strategy outlines the roles and responsibilities for implementing gender integration pilots (supported by C3) across four blocks in Muzaffarpur, Nalanda, and Patna districts. Approved in August 2022, this strategy is now being rolled out through Sajha Shakti Kendras (SSKs) now known as Didi Adhikar Kendra (DAK), which serve as the operational hubs for gender-related initiatives.

### Capacity Building:

Over the past year, JEEVIKA, in collaboration with C3, has focused on building the capacity of both its organizational staff and community-based organizations (CBOs). Approximately 200 leaders from 11 CLFs (Cluster Level Federations) across the targeted blocks have been trained on gender integration, promoting gender equality, and addressing gender-based violence. Additionally, around 100 state-level

JEEVIKA staff have been oriented to incorporate gender analysis and a rights-based approach into their work, ensuring that their program strategies align with the broader goals of women's empowerment and gender equality.

### **Expansion and Infrastructure:**

Scale up these efforts, JEEVIKA is committed to establishing Didi Adhikar Kendras in 174 blocks across 38 districts in Bihar. These centers, primarily located in government-owned buildings within block premises, serve as safe spaces where women can access essential resources, assert their rights, and seek guidance and assistance. Where government buildings are not immediately available, the centers temporarily operate out of CLF spaces or rented locations. As of now, 81 blocks have secured government buildings for these centers.

### **Training and Implementation:**

In collaboration with PRADAN and C3, a comprehensive training program has been developed for JEEVIKA staff, DAK (Didi Adhikar Kendra) Community Resource Persons (CRPs), and DAK coordinators. This program, aligned with NRLM guidelines, aims to prepare personnel for effectively managing these centers and supporting women in need. State-level orientation has been completed for 1,072 individuals, including District Project Managers (DPMs), Block Project Managers (BPMs), and State Development (SD) managers. Additionally, 74 State Resource Persons (SRPs) have been trained, and ongoing training for District Resource Persons (DRPs), Block Resource Persons (BRPs), and DAK coordinators is progressing, with 296 DRPs/BRPs and 98 DAK coordinators trained to date. The expansion and training efforts are supported by key partners like the Centre for Catalyzing Change and PRADAN, ensuring a collaborative approach to empowering women across Bihar.

The Nayi Chetna awareness program, launched in 2022, is an annual initiative conducted from November to December, aimed at raising awareness about gender equality and combating gender-based violence across Bihar. The program's outreach is extensive, engaging communities at all levels—Block, CLF, and VO (Village Organization).

At the Block level, 470 training sessions were held on the Prevention of Sexual Harassment (POSH), educating staff about creating safe workplaces for women. At the CLF level, the program focused on mandatory meetings and training on gender-based violence, with 1,322 sessions conducted—the highest among all activities. At the VO level, 9,407 rallies were organized, demonstrating the program's deep grassroots engagement. This extensive outreach highlights the program's commitment to educating communities about gender equality and empowering women to speak out against violence.

### **Safety Audits by JEEVIKA**

Through its technical partner, agency, JEEVIKA has implemented Safety Audits in rural Bihar, focusing on improving the safety and mobility of women and girls in public spaces. Conducted between December 2023 and March 2024, these audits in Rajgir, Dhanarua, and Minapur involved CBOs mapping villages, identifying dark spots, and assessing safety based on factors like lighting, road conditions, and the availability of safe public transport.

The audits revealed significant safety concerns, such as inadequate street lighting, unsafe areas and frequent harassment spots. These findings led to immediate actions, including the installation of street lights and the initiation of police patrols in identified areas. JEEVIKA leaders, with strong community support, played a crucial role in collaborating with local authorities to address these issues, thereby creating safer environments for women and girls in these communities.

### **The Impact of These Programs**

#### **Gender-Based Violence Resolution:**

Approximately 70% of cases addressed by Sajha Shakti Kendras (SSK) aka Didi Adhikar Kendra (DAK) involved gender-based violence, including domestic abuse, sexual harassment, child marriage, abandonment, and cyber abuse. Support provided by SSK coordinators included counseling, legal assistance, and referrals to formal services like the police and helplines. About 54% of these cases were resolved, mainly through counseling, while the remaining 46% are ongoing or have been referred to formal support services. This

demonstrates the critical role of SSKs in providing timely and effective support to women facing violence.

### **Social Entitlements Access:**

The remaining 30% of cases dealt with accessing social entitlements, such as government schemes for housing, pensions, and education. However, 58% of these cases remain unresolved due to delays in government processing. Despite these challenges, the SSKs have successfully escalated many cases to the relevant authorities, ensuring that women receive the support they are entitled to.

### **Community-Based Support Networks:**

Downstream linkages have shown that most cases are referred by trained Gender Point Persons, underscoring the importance of informal support networks like JEEVIKA CBOs. These networks are crucial in raising awareness, supporting survivors, and connecting them with the resources they need to overcome gender challenges.

### **Testimonies and Case Studies**

#### **Convergence with Mahila Thana: Successful Negotiation**

In Gararur Gram Panchayat, Rajgir Block, Nalanda District, Nila Devi (name changed), a daily wager, faced abandonment by her husband who had remarried in Chennai. After learning about Sajha Shakti Kendras through her Village Organization, she received counseling and emotional support. With the SSK's help, she reported her case to the local Mahila Thana. Through negotiations facilitated by the SSK, her husband agreed to provide a monthly subsistence amount of 15,000 for her and their children. The SSK continues to monitor the situation to ensure compliance with the agreement.

#### **Multi-Pronged Support for Survivors of Gender-Based Violence**

In Panapur Gram Panchayat, Minapur Block, Muzaffarpur District, Kanti Devi (name changed) endured years of physical and emotional abuse from her husband. With the support of her Village Organization and Sajha Shakti Kendra, she received counseling and

legal guidance. After a stern intervention from the SSK, her husband agreed to cease his abusive behavior. Kanti Devi now lives in a violence-free home, with the SSK providing regular follow-ups to ensure the situation remains stable.

### **Facilitating Access to Medical Therapy**

In Kundli Village, Rajgir Block, Nalanda District, Sarita Devi's (name changed) six-year-old son struggled with speech challenges. Despite spending considerable money on treatment, she saw no improvement. Upon learning about Sajha Shakti Kendras, she was connected to the Saksham Buniyaad Kendra, where her son began receiving speech therapy. Within six to seven sessions, her son started speaking in broken sentences, bringing immense joy to the family. The SSK continues to support the family as the child progresses.

The programs implemented by JEEVIKA, such as the Didi Adhikar Kendras, Nayi Chetna awareness campaigns, and Safety Audits, have made significant strides in addressing gender challenges in rural Bihar. These initiatives have not only provided critical support to women facing gender-based violence but have also empowered them to access social entitlements and assert their rights. By continuing to expand and strengthen these programs, JEEVIKA is paving the way for a more equitable and supportive environment for women across the state, demonstrating that change is possible when communities come together to challenge and overcome gender barriers.





# Empowerment through Knowledge: JEEVIKA's Publications

JEEVIKA's mission of rural empowerment extends beyond its grassroots interventions. A key pillar of this mission is the strategic dissemination of knowledge, curated through a broad spectrum of publications. These publications are not only a reflection of JEEVIKA's achievements but also a vital tool for community education and engagement. The organization's Knowledge Management and Communication (KMC) team has been at the forefront of ensuring that JEEVIKA's work is documented, shared, and celebrated. Through newsletters, case studies, compendiums, and more, these publications empower communities and stakeholders by providing access to vital information and ideas.

## Periodicals and Publications: A Comprehensive Approach

JEEVIKA has consistently demonstrated its commitment to document its activities and successes. The JEEVIKA monthly newsletter, with 84 editions published so far, offers a regular update on the organization's interventions, giving stakeholders — from policymakers to community members—valuable insights into its initiatives. The newsletter highlights recent achievements and progress, providing a channel for transparent communication and maintaining engagement across various platforms.

The community newsletter, with 51 editions, is specifically tailored to reach women and community-based organizations (CBOs) in rural Bihar. It captures stories of change, resilience, and success, featuring JEEVIKA Didis and community institutions. These stories serve as a motivational tool for other women, encouraging them to participate in local leadership and economic activities. The newsletter is read aloud in Community Based Organizations (CBOs) meetings, ensuring wide dissemination and collective learning.

JEEVIKA's Satat Jeevikoparjan Yojna (SJY) newsletter is another specialized publication, with 39 editions focusing on ultra-poor family life cycles. This publication provides insights into the gradual approach needed to uplift the poorest households, sharing strategies for sustainable poverty alleviation.

Additionally, the quarterly magazine, "The ChangeMakers," serves as a platform for more in-depth thematic interventions, showcasing specific verticals, such as financial inclusion, livelihood generation, and gender equity. The 18 editions published so far have been well-received, offering stakeholders a comprehensive understanding of JEEVIKA's progress in these areas.

The organization's flipcharts, distributed in over 9,000 copies across Bihar, focus on topics like the Community Grievance Redressal Mechanism (CGRM). These visual aids are essential for spreading awareness and providing community members with accessible tools to understand and engage with the grievance redressal system.

### **National and International Recognition: Sharing Bihar's Success Stories**

JEEVIKA has not only made an impact at the state level but has also gained national and international recognition through its knowledge-sharing efforts. One of its significant contributions includes its role in the National Compendium on Millets, published by the Ministry of Rural Development under the National Rural Livelihood Mission (NRLM). The publication highlights the work of women farmers in reviving millet cultivation, showcasing how JEEVIKA has promoted nutritional security and financial resilience in rural Bihar.

Similarly, JEEVIKA's transformative models, such as Bank Sakhi and Pashu Sakhi, have been featured in the national compendium "75 Inspirational Stories of Atmanirbhar Rural Women." These models have empowered women by providing them with roles in delivering banking services and para-veterinary care to rural households, significantly improving their economic standing.

Furthermore, JEEVIKA contributed to the Lakhpati Didi Compendium, jointly published by the Ministry of Rural Development and Pradan. This compendium featured five case studies from JEEVIKA, highlighting areas such as Banking Excellence, Satat Jeevikoparjan Yojana, Sustainable Livelihoods, Community Governance, and Financial Management of community-based organizations. These case studies underscore JEEVIKA's success in strengthening financial systems and governance at the grassroots level, offering replicable models for other states and regions.

At the international level, JEEVIKA's research on the Sangam Cluster Level Federation in Muzaffarpur was presented at the International Conference on Women's Collectives and Economic Empowerment of Women in Eastern India. This study emphasized the critical role that women's collectives play in alleviating poverty through a tiered structure that builds financial, social, and human capital.

### **Knowledge Dissemination through Event-Specific Publications**

In addition to its regular publications, JEEVIKA has also contributed to state-level events by producing a range of materials, including CM Books, Coffee Table Books, Best Practices, Success Stories, and Compendiums. These publications are often circulated at high-profile events to showcase JEEVIKA's interventions and achievements. By documenting and presenting success stories and best practices, JEEVIKA ensures that its work reaches a broader audience, including government officials, development practitioners, and other stakeholders. These event-specific publications are critical in positioning JEEVIKA as a thought leader in rural development and women's empowerment.

### **Empowerment through Knowledge Sharing**

JEEVIKA's publications serve a dual purpose: They are tools for community empowerment and resources for knowledge-sharing at a broader level. By documenting its work meticulously, JEEVIKA ensures that its strategies, challenges, and successes are not only preserved but also accessible for replication and scaling. These publications enable rural women and communities to take ownership of their development journeys, while also offering valuable insights to policymakers and practitioners looking to implement similar initiatives.

In conclusion, JEEVIKA's extensive portfolio of publications reflects its deep commitment to knowledge-driven empowerment. By harnessing the power of communication, the organization ensures that its transformative work in rural Bihar is documented, shared, and replicated. Whether through newsletters, flip-charts, or compendiums, JEEVIKA's publications are more than mere documents—they are catalysts for change, inspiring action and fostering sustainable development across rural India.

# दीदी की कहानी

# दीदी की जुबानी

केस-1 पिको प्रोजेक्ट

## आर्थिक सशक्तीकरण की दिशा

जीवन की मूलभूत जरूरतों को पूरा कर ही आर्थिक प्रगति के उच्च मानकों के बारे में सोचा जा सकता है। इन जरूरतों में रोटी, कपड़ा और मकान शामिल है। इसके बाद स्वास्थ्य, शिक्षा और सुरक्षा का स्थान है। आर्थिक प्रगति इन सभी जरूरतों के केंद्र में आता है। इन जरूरतों को पूरा करने के लिए गरीब, अत्यंत गरीब परिवारों को नियमित आय के चक्र से जोड़ना होगा। तभी गरीब परिवार, आर्थिक सशक्तीकरण की दिशा में कदम बढ़ा सकते हैं। इस दिशा में सामुदायिक संगठन, सामूहिक प्रयास, सूक्ष्म वित्त, बचत और स्वरोजगार का विशेष योगदान है। उदहारण के तौर पर देखा जा सकता है कि जीविका के माध्यम से गरीब ग्रामीण महिलाओं को स्वयं सहायता समूह, ग्राम संगठन, संकुल संघ जैसे सामुदायिक संगठन से जोड़ कर इस दिशा में सामूहिक प्रयास किये जा रहे हैं। प्रतिशत के कम ब्याज दर पर जीविका दीदियों को ऋण उपलब्ध कराया जा रहा है। इसका परिणाम यह हुआ कि दीदियाँ इन पैसों से सूक्ष्म उद्यम, लघु-कुटीर उद्योग, खेती-पशुपालन जैसे स्वरोजगार शुरू कर पाई हैं। स्थानीय स्तर पर आय के साधन विकसित कर पाई हैं। नियमित आय होने से इनकी आर्थिक स्थिति बेहतर हुई। जीवनयापन की बुनियादी जरूरतों को पूरा कर भविष्य के बारे में सोच पा रही है। सामूहिक प्रयास और स्वरोजगार से गरीब ग्रामीण महिलाओं को गरीबी से बाहर आने में मदद मिल रही है। स्थानीय स्तर पर स्वरोजगार के साधन विकसित होने से जहाँ रोजगार के लिए पलायन में कमी आई। वहीं, पूँजी और श्रम का फायदा, स्थानीय स्तर पर आर्थिक



व्यवस्था को विकसित करने में मिली। जीविका के माध्यम से आर्थिक सशक्तिकरण में सामूहिक संगठनात्मक प्रयास, सूक्ष्म वित्त, स्वरोजगार, जीविकोपार्जन के साधन पर जोर देकर, आर्थिक सशक्तिकरण की स्थानीय और सतत् प्रक्रिया पर बल दिया गया। ताकि 1 करोड़ 30 लाख परिवारों को आर्थिक प्रगति के पथ से जोड़ा जा सके। इसी कड़ी में किशनगंज जिला के बहादुरगंज प्रखंड की चंचला सिन्हा जीविका दीदी की कहानी प्रेरणादायी है। चंचला जीविका दीदी वर्ष 2018 में सुधा जीविका स्वयं सहायता समूह से जुड़ी। स्वयं सहायता समूह में जुड़ने से पहले दीदी की आर्थिक स्थिति कमजोर थी। छोटे जोत की खेती से कभी आमदनी होती, कभी नहीं होती थी। इस कारण घर में आर्थिक तंगी बनी रहती थी। दीदी के तीन बच्चों भी हैं। उनका भी भरण – पोषण ठीक से नहीं हो पाता था। दीदी ने सुधा स्वयं सहायता समूह से कुल 1 लाख रुपया ऋण लेकर अगरबत्ती निर्माण का काम शुरू किया। इसे चलाने में दीदी के पति मदद करते हैं। घर पर ही अगरबत्ती का निर्माण कर स्थानीय बाजार में इसे बेचती हैं। इससे उन्हें महीने में 25 से 35 हजार रुपये की आमदनी हो जाती है। नियमित आमदनी होने से दीदी के परिवार की आर्थिक स्थिति में सुधार आया है एवं अपने परिवार का भरण-पोषण कर रही हैं। दीदी बताती हैं कि जीविका स्वयं सहायता समूह में जुड़ने से उनका क्षमतावर्धन हुआ। बैंक, ऋण, बचत की जानकारी मिली। अपना स्वरोजगार शुरू करने की प्रेरणा और पूँजीगत सहयोग मिला। दीदी बताती हैं कि अगरबत्ती उद्यम शुरू करने से आय का निश्चित साधन विकसित किया है। कोई भी आर्थिक मॉडल तभी सफल माना जा सकता है। जब उसमें सतत्, टिकाऊ, समेकित, समावेशी तत्व शामिल हो। जीविका के माध्यम से सामुदायिक संगठन के जरिये आर्थिक सशक्तिकरण के इसी मॉडल को अपनाया गया है। चंचला जीविका दीदी ने स्वयं सहायता समूह से जुड़ कर सतत् आय के साधन विकसित किया है।

## केस-2 Skills

# Skills That Shape Future

Like every small child, Goldie Kumari, who lived with her laborer father and homemaker mother in Tharthari block of Nalanda, had many dreams in her eyes. The desire for a good house, a good job and a life full of comforts kept Goldie restless all the time, but the jingle of a few coins in the hands of her father returning after working all day used to force her out of her dreams. Overall, the situation was such that it was a matter of luck if her family could get enough food for two meals a day, let alone a happy, prosperous home and family.

Goldie's mother Mrs. Anupam Devi, like other rural homemaker, was worried about the future of her family. Apart from Goldie, Goldie's parents were somehow fulfilling their duty while being burdened with the responsibilities of raising their two children i.e. a son and a daughter.

In the year 2010, Goldie's mother Anupam Devi came in contact to know about JEEVIKA. With the hope of taking her life on the path of progress, Anupam Devi become part of Jeevika's self-help group and started meeting the needs of her family by saving small amounts and taking loans from time to time. For a bright future, it



was necessary that the children of the family should get good education and a good job after studying so that the conditions of the family could improve.

Goldie, the eldest of the children, got the support of her mother Anupam Devi and started her studies. Goldie now began to see hope for her dreams to come true and she continued her studies diligently. Due to unavailability of good schools and college in Tharthari, Goldie joined nearby block-hilsa school & college and completed her 10th as well as intermediate and graduation and passed with good marks.

After graduation, Goldie needed employment. Wanting to stand on her feet as soon as possible, Goldie tried to get a job in many small and big institutions and gave interviews but a simple bachelor degree was not enough to secure a job. Goldie had understood that unless she had special skills, her dreams could not be fulfilled. Skill development required a lot of money which was impossible for Goldie and her parents. Goldie desperately started looking for a place where she could get various types of skill development facilities without spending her own money.

Her search ended after knowing about the technical, non-technical and management training programs for unemployed youth in various fields under “Din Dayal Upadhyaya Grameen Kaushalya Yojana”. Jeevika provides information related to all types of employment and skill training from time to time to all the women associated with village organizations and cluster level associations. When Goldie's mother Anupam Devi heard about it, she put forward Goldie's name for this program without fail. Goldie was also very happy to know about it and joined the program with enthusiasm. On behalf of the Employment and Skill Development Department of the District Unit of Jeevika Nalanda, many such boys and girls are selected according to their ability and

interest and sent to selected training centers of the state for training.

In this sequence, Goldie was sent to “Scope Training & Consulting Pvt Ltd. located in Sampatchak block of Patna district.” She went for a 6-month training, where Goldie received training in banking and financial management as well as general business management. After 6 months of residential training, Goldie was selected for the post of “Quality Controller” in the well-known company “Schinder Electrics” of Hyderabad at monthly salary of Rs. 15000.

The girl who grew up amidst constraints in a small village had now got wings, Goldie was now eager to spread her tiny wings and cross the entire sky. Goldie's parents were also elated with her achievement but were also somewhat skeptical about sending their little girl alone to such a big city like Hyderabad. Goldie convinces her parent how important this opportunity is to change her and her entire family's circumstances and that she should go ahead and embrace it.

Ultimately, with the approval and blessings of her parent, Goldie left for Hyderabad. After reaching Hyderabad, Goldie again got training for 3 years and never looked back. Initially, with residential facilities.

Every month Goldie started sending a part of her salary to her parents in her village and the conditions of her house also started improving. Today Goldie's salary has also increased and now she is receiving around Rs 22 thousand every month.

According to Goldie, after completing her general graduation from college, she was just a graduate but after taking skill training, her identity changed. Today, Goldie is a source of inspiration for every poor girl in her village and like her, the girls of her village also want to fulfill their dreams by developing their skills along with studies.

बड़की दीदी अपने काम से लौट रही थीं कि उनकी नजर पास ही चल रही स्वयं सहायता समूह की बैठक पर पड़ी-

# बड़की दीदी



● गीबू



दीदी, आप सब आज किस मुद्दे पर चर्चा कर रही हैं?

दीदी, बैंक से मिले ऋण को उपयोगी बनाने पर चर्चा कर रहे हैं।



आपलोग किस काम के लिए ऋण ले रही हैं?

मैं घर की ढलाई के लिए ऋण ले रही हूँ।

मैं अपने इलाज के लिए।

मैं बेटी की शादी के लिए दीदी!



अरे, यह सारी आवश्यकताएं तो स्वाभाविक हैं, लेकिन आपको तो ऋण वापस भी करना है।

हाँ दीदी! ये तो है, हम सब खेतों में काम करते हैं, मजदूरी करके जितना पैसा कमाएंगे उसी से ऋण चुकायेंगे न!



लेकिन दीदी, ऋण की राशि सिर्फ घर की जरूरतों को पूरा करने में इस्तेमाल कर रही हैं। इससे आपको ऋण वापसी में कठिनाई का सामना तो करना पड़ेगा ही न!

तो फिर हमें क्या करना चाहिए दीदी?



आप सबको खेती के साथ स्वरोजगार की ओर कदम बढ़ाने होंगे, ताकि घरेलू खर्चों के लिए बार-बार ऋण न लेना पड़े। साथ ही व्यर्थ का आर्थिक दबाव न पड़े।

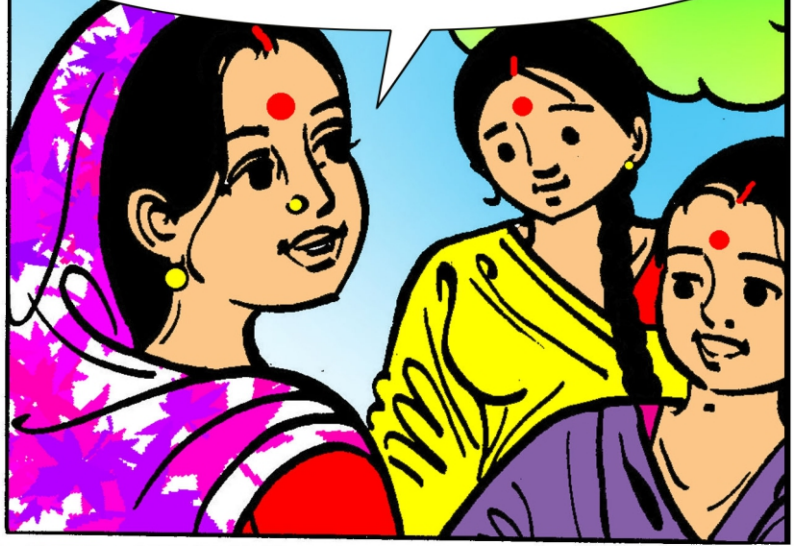
लेकिन दीदी, स्वरोजगार करने के लिए क्या-क्या करना होगा? इसकी जानकारी हमें नहीं है।

दीदी, स्वरोजगार का अर्थ- खुद का रोजगार, जैसे- कई दीदी सब्जी, फल एवं श्रृंगार की दूकान खोली हैं। आपके गाँव की ही मुन्नी देवी ने अपने समूह से 10,000 रुपये का ऋण लेकर किराने की दूकान खोली। धीरे-धीरे दूकानदारी की सारी जानकारियाँ हासिल कीं एवं आज कारोबार में पति को भी शामिल कर लिया।



अभी उनके रोजगार की क्या स्थिति है?

एक साल बाद उन्होंने अपने व्यवसाय की आमदनी से सारा कर्ज चुका दिया है और अब दुकान बढ़ाने की सोच रही हैं। पति-पत्नी मिलकर अभी महीने में 5-6 हजार रुपये कमा लेते हैं।



पर दीदी अगर सभी दीदियाँ किराने की दुकान खोलेंगी तो सबको मुनाफा कैसे होगा, क्योंकि खरीददारों का तो बंटवारा हो जाएगा।



अरे नहीं-नहीं, स्वरोजगार के और भी विकल्प हैं।

यदि कोई दीदी सिलाई-बुनाई करती है, पेंटिंग करती है या खाद्य सामग्री बनाने में दक्ष है, तो वह उसका व्यवसाय कर सकती है। इससे स्वावलंबन भी मिलेगा और रोजगार भी।

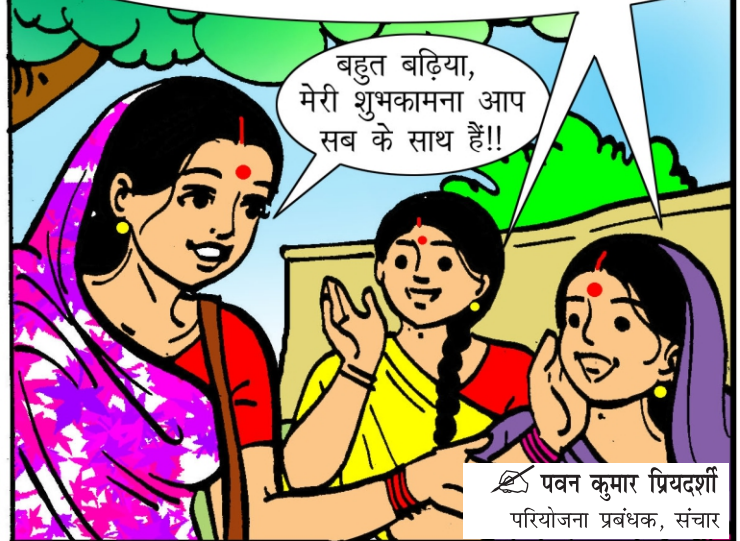


लेकिन दीदी समूह से तो थोड़े-थोड़े पैसे ही कर्ज के रूप में मिलते हैं, उससे हम व्यवसाय कैसे शुरू कर सकते हैं?

शुरुआत छोटे स्तर से की जा सकती है। जरूरी नहीं कि एक ही बार में सब कुछ किया जाए। आप सब थोड़े-थोड़े पैसे समूह से कर्ज लेकर छोटे व्यवसाय कर सकती हैं। फिर उसके मुनाफे से कर्ज की वापसी के साथ-साथ व्यवसाय में और पूँजी लगा सकती हैं। मेहनत और ईमानदारी से व्यवसाय में तरक्की निश्चित है।



ठीक है बड़की दीदी, आपकी बात सोलह आने सच है। हम समूह से ऋण लेकर अपनी-अपनी क्षमता के अनुसार स्वरोजगार के अवसर तलाशेंगे और स्वावलंबन की ओर बढ़ेंगे।



बहुत बढ़िया, मेरी शुभकामना आप सब के साथ हैं!!

पवन कुमार प्रियदर्शी  
परियोजना प्रबंधक, संचार

# मन की कलम से



## बाढ़ में भोजन सुरक्षा और स्वच्छता का संकल्प

बाढ़ के मौसम में जीवन की रक्षा,  
जीविका संगठन की कर्मठ सखा।  
भोजन सुरक्षा का संकल्प लिया,  
स्वच्छता का भी वादा किया ॥

हर घर में पहुंचे अनाज की बोरियाँ,  
सुनिश्चित हो हर थाली में रोटियाँ ।  
स्वच्छता का भी पूरा ध्यान रखा,  
जीविका संगठन ने अपना फर्ज निभाया ॥

जीविका के संकल्प पर,  
बाढ़ में भी अडिग विश्वास ।  
स्वयं सहायता समूह के संग,  
बढ़ाते कदम, बढ़ाते आस ॥

साफ-सफाई का संदेश,  
हर मन में भरते हैं ।  
स्वास्थ्य के दीप जलाकर,  
रोगों से बचाते हैं ॥

जीविका की शक्ति से,  
बदलते गांव-गांव की तस्वीर ।  
बाढ़ की विपदाओं में भी,  
उज्ज्वल होती है तक्दीर ॥

जीविका के संग अब ,  
दीदियाँ बाढ़ से भी नहीं डरते ।  
खाद्य सुरक्षा और स्वच्छता के पथ पर,  
हर कदम सब आगे बढ़ते ॥

**Pawan Kumar Priyadarshi**  
Project Manager Communication

## नारी शक्ति, बदलाव की राह

नहीं किरण बन छा गई,  
अंधियारे में लौ जला गई।  
सीमाओं को तोड़ चली,  
हर मुश्किल को मोड़ चली।

हाथ में हुनर, आँखों में सपना,  
मेहनत से रच डाला अपना सपना।  
खेत, दुकान, मशीन, कढ़ाई,  
हर जगह अब नारी समाई।

बेटी, बहन, माँ, सहारा,  
बन गई खुद एक उजियारा।  
जहाँ खड़ी, वहीं उजाला,  
नारी ने हर बंधन डाला।

अब समाज नया बनेगा,  
हर घर में दीप जलेगा।  
नारी जब संग खड़ी रहेगी,  
बदलाव की लहर बढ़ेगी!

## रचना आमंत्रण



जीविका द्वारा 'चेंजमेकर्स' (द्विभाषीय – त्रैमासिक) पत्रिका का प्रकाशन किया जाता है। पत्रिका में जीविका सम्पादित गतिविधियों / कार्यक्रमों / सफलता की कहानियों के प्रकाशन के साथ ही विभिन्न स्तरों पर कार्य कर रहे जीविका कर्मियों के अनुभवों को भी स्थान दिया जाता है। जीविका कर्मियों से आग्रह है कि वे जीविका से जुड़े अपने अनुभवों / सफलता की कहानियों / कविता / गतिविधियों आदि को 'चेंज मेकर्स' में प्रकाशन के लिए भेजें। रचना हिन्दी और अंग्रेजी या दोनों में से किसी भी भाषा में हो सकती है। रचना के साथ उससे संबंधित तस्वीरें अवश्य संलग्न हों। रचनाकार अपनी रचना के साथ अपना पूरा पता और संपर्क नंबर का उल्लेख अवश्य करें। रचना को निम्न मेल आईडी पर भेज सकते हैं—

[changemakers.brpl@gmail.com](mailto:changemakers.brpl@gmail.com)

प्रकाशन योग्य रचनाओं को रचनाकार के नाम के साथ पत्रिका में प्रकाशित किया जाएगा।  
— संपादकीय टीम, चेंजमेकर्स ,



Experienced the spirit of rural entrepreneurship at Bihar Saras Mela 2024, Gyan Bhawan



Honoring the success of Empowered Women at Lakhpati Didi Samman Samaroh, organized by JEEVIKA in Bihar



Showcasing JEEVIKA Didi Ki Rasoi – A tribute to nutrition and empowerment on Independence Day



Unveiling the Lakhpati Didi Success Story Compendium at Delhi Habitat Center, presented by DAY-NRLM





# JEEVIKA

Rural Development Department, Govt. of Bihar  
Vidyut Bhawan - II, 1<sup>st</sup> & 3<sup>rd</sup> Floor, Bailey Road, Patna- 800 021  
Ph. % +91-612-250 4981 : % Fax % +91-612-250 4960,  
Website % www.brlp.in : % E-mail % ceo@brlp.in